शिव जी की आरती

ओं जय शिव ओंकारा स्वामी जय शिव ओंकारा । ब्रहमा विष्णु सदा शिव अद्धाँगी धारा ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे । हंसानन गरूड़ासन वृषवाहन साजे ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहे । तीनो रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

अक्षमाला वनमाला रूण्डमाला धारी । चन्दन मृगमद सोहे भाले शुभकारी ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । सनकादिक ब्रहमादिक प्रेतादिक संगे ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

कर के बीच कमण्डल चक्र त्रिशुल धर्ता । जग कर्ता जगहर्ता जग पालनकर्ता ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

ब्रहमा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्य तीनो ही एका ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।

त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई गावे। कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे ।।
ओउ्म् जय शिव ओंकारा ।।